JESUS REDEEMS MINISTRIES

युवा जीवन

फ़रवरी 2026

शैतान ही वह है जो जाल बिछाता है।

यीशु से, जिसने कलवरी पर अपना खून बहाया?

आप किससे प्रेम करते हैं?

प्रस्तावना

मेरे प्रिय नौजवानों, यीशु मसीह के नाम पर आपको हार्दिक अभिनन्दन!

जब मैं आपको नए लक्ष्यों और नए दृढ़ संकल्प के साथ इस नए साल में कदम रखते हुए देखता हूँ, तो मेरा हृदय परमेश्वर की स्तुति से भर जाता है।

युवावस्था के इस काल में, एक सवाल सच में मायने रखता है: आप किसे खुश करने के लिए जी रहे हैं?

क्या आप उस परमेश्वर को खुश करने का चुनाव कर रहे हैं जिसने आपको बनाया है, या आप बस अपनी इच्छाओं का पालन कर रहे हैं और स्वयं को खुश कर रहे हैं?

अगर आप परमेश्वर को खुश करना चाहते हैं, तो आपका मन बदलना चाहिए। जब आपकी सोच नई होगी, तभी आपका जीवन यह दिखा पाएगा कि सच में उसे क्या पसंद है।

जब बाकी सब लोग लापरवाही से जी रहे थे—लगातार अपने हृदय के विचारों और इच्छाओं को पूरा कर रहे थे—तीन नौजवान, शद्रक, मेशक और अबेदनगो, हिम्मत से खड़े हुए और स्वयं को प्रभु के लिए अलग कर लिया। उस पल ने बाबुल को हिला दिया। क्यों? क्योंकि उनके हृदय परिवर्तित थे और उनका विश्वास प्रकट।

आज भी, जब आपका हृदय परिवर्तित हो जाता है, तो आपके फैसले साफ हो जाते हैं, और जिस रास्ते पर आप चलते हैं, वह सीधा और स्थिर हो जाता है।

आज की पीढ़ी के नौजवान पाप और सांसारिक इच्छाओं के पीछे भाग रहे हैं, अगर आप अपनी पहचान बनाना चाहते हैं, आत्मविश्वास से चलना चाहते हैं, और ईमानदारी से जीना चाहते हैं—तो आपको यह फैसला स्वयं लेना होगा।

मीडिया और सोशल प्लेटफॉर्म द्वारा दिखाए गए भ्रमों में फंसने से बचने के लिए, आपके मन को नए सिरे से सोचने की ज़रूरत है। आपको सोचने का एक बदला हुआ तरीका चाहिए। यही सच्ची तरक्की का रास्ता है।

जब आप अपनी दिशा सही करते हैं, तो आपका भविष्य उज्ज्वल होगा। यह कभी मत भूलना: आप वही परिवर्तित नौजवान हैं जिसे परमेश्वर ढूंढ रहा है!

उसके लिए उठने और चमकने का अपना मौका न चूकें।

परमेश्वर का अनुग्रह हमेशा आपके साथ रहे!

मसीह मिशन में
मोहन सी. लाजरस

बाइबल खोज

हर साल की शुरुआत में, हम में से कई लोग एक संकल्प लेते हैं: "इस साल, मैं बाइबल को शुरू से आखिर तक कम से कम एक बार ज़रूर पढ़ूंगा।"
लेकिन जल्द ही बड़े सवाल आते हैं—मैं कहां से शुरू करूं? मैं कैसे पढ़ूं? मैं जो पढ़ रहा हूं उसे असल में कैसे समझूं?
इस असमंजस की वजह से, वह संकल्प अक्सर कुछ दिन भी नहीं चल पाता।
बाइबल में कुल 1,189 अध्याय हैं। अगर आप रोज़ सिर्फ़ 4 अध्याय पढ़ते हैं, तो आप एक साल में पूरी बाइबल पढ़ सकते हैं!
इस अनुभाग में, हम बाइबल की हर किताब की पृष्ठभूमि और एक छोटा सा अवलोकन देखेंगे, जिससे आपकी यात्रा स्पष्ट, मतलब वाली और करने लायक बन जाएगी।

उत्पत्ति – शुरुआत, अलगाव और परमेश्वर द्वारा उद्धार की योजना की कहानी

विषय: शुरुआत
विशेष घटनाएं और लोग

सृष्टी (उत्पत्ति 1–2)
मनुष्य परमेश्वर की छवि में बनाए गए हैं—हर एक जीवन का महत्व, गौरव और मकसद होता है।

पतन (उत्पत्ति 3)
पाप दुनिया में आता है और रिश्तों को तोड़ देता है—परमेश्वर के साथ, दूसरों के साथ, और हमारे अंदर भी।

नूह और प्रलय (उत्पत्ति 6–9)
परमेश्वर बुराई का न्याय करते हैं, फिर भी जीवन बचाकर और उम्मीद देकर अपनी दया और वफ़ादारी दिखाते हैं।

अब्राहम की बुलाहट (उत्पत्ति 12)
परमेश्वर सभी देशों को आशीष देने के लिए एक परिवार को चुनते हैं—उनका संसार भर में उद्धार की योजना का खुलासा होने लगता है।

दोषयुक्त परिवार (उत्पत्ति 25–36)
इसहाक, जैकब और एसाव के ज़रिए, हम एक ज़बरदस्त सच देखते हैं: परमेश्वर कमियों वाले लोगों के ज़रिए काम करते हैं—झूठ, पक्षपात, जलन और झगड़े के बीच।

युसूफ (उत्पत्ति 37–50)
परमेश्वर धोखे, दुख और अन्याय को मुक्ति और मकसद में बदल देते हैं।

•••

हमारे सोचने के लिए

- हमें इरादे और मकसद के साथ बनाया गया है।
- जब हम विफल होते हैं या कम पड़ जाते हैं, तब भी परमेश्वर हमारे भीतर जो शुरू किया है उसे पूरा करने के लिए विश्वासयोग्य रहते हैं।
- परमेश्वर हमारी पीड़ा और मुश्किलों को किसी भलाई में बदल सकते हैं।
  "तुमने मेरे साथ बुरा करने की योजना बनाई थी, लेकिन परमेश्वर ने उसी से भलाई की योजना बनाई" (उत्पत्ति 50:20)।
- भले ही संसार बिखर गया हो, परमेश्वर कभी पीछे नहीं हटते—उनकी छुटकारे की कहानी पूरी बाइबिल में जारी है।

उत्पत्ति हमें याद दिलाता है: परमेश्वर ने अभी कार्य खत्म नहीं किया है—उन्होंने अभी शुरुआत की है।

टूटेपन(निराशा) से मकसद तक का सफर

हमने डॉ. अजिन से, जो अभी अपना मेडिकल करियर बना रहे हैं, उस हॉस्पिटल में जहाँ वे काम करते हैं मुलाकात की। अपने व्यस्त समय सारणी के बावजूद, जब हमने उनसे उनके एकेडमिक सफर के पीछे का राज पूछा, तो उनका जवाब बहुत प्रेरणादायक था। यह है उनकी कहानी, खास आपके लिए सोच-समझकर तैयार की गई है।

हमें अपने परिवार और बचपन के बारे में बताएं।

मेरा जन्म और पालन-पोषण थेनी जिले में एक मसीही परिवार में हुआ। मेरे पिता का तीन साल पहले एक दुर्घटना में निधन हो गया। मेरी माँ एक रिटायर्ड कॉलेज प्रोफेसर हैं, और मेरी बड़ी बहन एक डेंटिस्ट है।

हालांकि मैं एक मसीही परिवार में पला-बढ़ा, लेकिन मेरा विश्वास सिर्फ नाम का था। मेरे पिता को शराब की लत थी, जबकि मेरी माँ गहराई से परमेश्वर का भय को मानने वाली थीं। मेरे बचपन में घर में अक्सर झगड़े होते थे। एक बार, एक गंभीर झगड़े के बाद, मेरे पिता हमें छोड़कर चले गए। उस पल से, मेरी माँ ने अकेले ही हमारा पालन-पोषण किया।

क्योंकि वह सच में परमेश्वर को जानती थीं, इसलिए उन्होंने हमें प्रार्थना और विश्वास के साथ पाला। हमें रिश्तेदारों से कोई खास मदद नहीं मिली, लेकिन परमेश्वर हमारी ताकत बना।

लगता है आपका बचपन काफी मुश्किलों भरा था। आप पढ़ाई में कैसे थे?

ईमानदारी से कहूँ तो, मैं एक औसत छात्र था। हालाँकि मैंने डॉक्टर बनने का सपना देखा था, लेकिन मेरे मार्क्स काफी नहीं थे, और मैंने धीरे-धीरे उस सपने को छोड़ना शुरू कर दिया। लेकिन परमेश्वर ने एक मित्र के ज़रिए एक नया दरवाज़ा खोला—विदेश में मेडिकल की पढ़ाई करने का मौका। मैं MBBS करने के लिए चीन गया। सब कुछ नया था: देश, भाषा, संस्कृति, लोग। वह दौर अकेलेपन से भरा था।

नए देश में रहना मुश्किल रहा होगा। आपने अपनी पढ़ाई का कैसे प्रबन्ध किया?

कॉलेज के तीसरे साल में, मैंने अपने कंप्यूटर पर वीडियो गेम खेलना शुरू कर दिया। हालाँकि मैं परीक्षा में अच्छे नंबर लाता रहा, लेकिन गेमिंग धीरे-धीरे मेरा समय खाने लगा। आखिरकार, यह एक लत बन गई—मुझे हर दिन खेलने की ज़बरदस्त इच्छा होती थी।

विदेशी मेडिकल स्नातकों को भारत में मान्यता पाने के लिए FMGE परीक्षा पास करना होता है। अपनी गेमिंग की लत के बावजूद, मैंने पहले ही अटेम्प्ट में परीक्षा पास कर लिया। एक तरफ, मेरी पढ़ाई में परमेश्वर की कृपा साफ दिख रही थी; दूसरी तरफ, मैं कीमती समय बर्बाद कर रहा था। फिर भी, मैंने अपना कोर्स सफलतापूर्वक पूरा किया।

यह बहुत बढ़िया है। भारत लौटने के बाद, क्या गेमिंग ने आपके समय पर हावी रहना जारी रखा?

जब मैं कोर्स पूरा करके भारत लौटा, तो COVID-19 महामारी शुरू हो गई। लॉकडाउन के दौरान, मैंने "आओ, हम प्रार्थना करें" प्रोग्राम देखना शुरू किया और प्रार्थना में शामिल हुआ।

जब मैंने सुना कि कैसे परमेश्वर ने भविष्यवाणी करके महामारी के बारे में बताया था और लोगों को पहले से प्रार्थना करने के लिए प्रेरित किया था, तो मेरे मन में एक बात गहराई से आई: "क्या परमेश्वर सच में लोगों से बात करते हैं?"

उस सवाल ने मेरे अंदर कुछ जगा दिया। मैंने पूरी लगन से यीशु को खोजना शुरू किया। एक रात, प्रार्थना के दौरान, मैंने परमेश्वर के ज़बरदस्त प्रेम का अनुभव किया—और उस पल ने सब कुछ बदल दिया। मुझे मुक्ति मिल गई। उस दिन से, मुझे उन वीडियो गेम्स से नफ़रत हो गई जिन्होंने कभी मुझे गुलाम बना रखा था।

बहुत बढ़िया! यीशु को अपनाने के बाद आपने क्या बदलाव महसूस किए?

मैंने प्रार्थना में ज़्यादा समय बिताना शुरू किया और पवित्र आत्मा का अभिषेक प्राप्त किया। मेरी प्रार्थना का जीवन पूरी तरह से बदल गया। मैंने देश के लिए प्रार्थना करना, सुसमाचार की पर्चियाँ बाँटना और प्रार्थना सभाएँ आयोजित करना शुरू किया। परमेश्वर ने मुझे अपने काम के लिए इस्तेमाल करना शुरू कर दिया। इसके तुरंत बाद, उन्होंने मेरे लिए जनरल सर्जरी में MS करने के रास्ते खोल दिए।

अभी, मैं तिरुवरूर गवर्नमेंट मेडिकल कॉलेज में पोस्टग्रेजुएट सर्जरी का छात्र हूँ। परमेश्वर की कृपा से, मेरी शादी भी अप्रैल में हुई। अपने मेडिकल पेशे के ज़रिए, परमेश्वर हर दिन लोगों को अपना प्रेम दिखाने में मेरी मदद कर रहा हैं।

आप युवाओं को क्या संदेश देना चाहेंगे?

आप किसी भी स्थिति में हों, एक परमेश्वर हैं जो आपसे सच में प्रेम करता है और आपके साथ खड़ा है — और वह परमेश्वर यीशु है। आपकी लत या संघर्ष कितने भी गहरे क्यों न हों, अगर आप यीशु को पुकारते हैं, तो उसमें आपको आज़ाद करने की सामर्थ है।

प्रिय युवा मित्रों,

अगर परमेश्वर अजिन जैसे एक औसत छात्र को—जो कभी लत से जूझ रहा था—चीन में MBBS की पढ़ाई करने के लिए ले जा सकते हैं, और उसे जनरल सर्जरी में MS करने के लिए आगे बढ़ा सकते हैं, तो वही परमेश्वर आपको भी ऊपर उठा सकता है।

अगर आप किसी भी तरह के बंधन में फँसे हैं, तो स्वयं को यीशु को सौंप दें, ईमानदारी से प्रार्थना करें, और उसके मकसद के लिए जिएँ।

प्रभु निश्चित रूप से आपको ऊपर उठाएँगे।

हर पांचवें रविवार को हमारे पास युवाओं के लिए एक विशेष कार्यक्रम होता है - "रिवाइवल इग्नाइटर फ़ेलोशिप"। यह जीसस रिडीम्स मिनिस्ट्रीज के यूट्यूब चैनल पर 06/03/2026 और 31/05/2026 को दोपहर 3:00 बजे "लाइव" प्रसारित किया जाएगा।कृपया अधिक जानकारी के लिए नीचे दिए गए नंबर पर हमसे संपर्क करें।

Revival IGNITERS

संपर्क संख्या : +919750955548

YouTube Jesus Redeems - Hindi

Comforter DIGITAL CHANNEL www.comfortertv.com

युवा जीवन

यीशु उद्धार करता है युवा तंबू के माध्यम से
"युवा जीवन" नामक मासिक पत्रिका तमिल, अंग्रेज़ी, हिंदी, मलयालम, तेलुगु, कन्नड़ और बांग्ला भाषाओं में प्रकाशित की जा रही है।

हर महीने प्रकाशित होने वाली युवा जीवन पत्रिका को आप प्राप्त करना चाहते हैं तो किस भाषा में चाहिए, उस भाषा के सामने टिक करके उस भाग का फोटो लेकर अपनी स्पष्ट पता विवरण के साथ हमें व्हाट्सऐप करें।

+91 9750955548 youth@jesuredeems.org

SOUL DETOX

हेलो मित्रों!

इस तेज़ रफ़्तार, डिजिटल ज़माने में, हम जानबूझकर या अनजाने में बहुत सी चीज़ों को जो हम देखते और सुनते हैं, उन्हें स्वयं पर प्रभाव डालने देते हैं और वे हमें आकार देती हैं। नतीजा? डर, तनाव, आत्म-सम्मान की कमी, बेचैनी—यहां तक कि आत्महत्या के विचार। दुख की बात है कि यह लिस्ट लंबी है। इस सच्चाई से इनकार नहीं किया जा सकता: यह सब हमारी आत्मा को बहुत बेचैन करता है।

जैसे हमारे शरीर को टॉक्सिन(जहर) निकालने और ठीक से काम करने के लिए डिटॉक्स(विषहरण) की ज़रूरत होती है, क्या आपको नहीं लगता कि हमारी आत्मा को भी—जो हमारे प्रभु यीशु मसीह के साथ हमेशा रहने के लिए बनी है—विषहरण(डिटॉक्स) की ज़रूरत है?

ठीक यही हम इस बिल्कुल नए अनुभाग में समझने और जानने वाले हैं। तो... क्या आप तैयार हैं?

इस महीने, हम "ज़हरीली मिलता और रिश्तों" के बारे में बात करेंगे और वे न सिर्फ़ हमें, बल्कि हमारी आत्मा को भी कैसे नुकसान पहुँचाते हैं। ज़्यादातर समय, ऐसे रिश्ते दोषारोपण, स्वार्थी फ़ायदे के लिए हेरफेर, जलन, एकतरफ़ा कोशिश और भावनात्मक घुटन से भरे होते हैं।

नतीजा:

वे आपकी आध्यात्मिक सामर्थ को खत्म कर देते हैं और डर, तनाव और आत्म-संदेह को बढ़ाते हैं।

परमेश्वर हमें 1 कुरिंथियों 15:33 में साफ़ तौर पर चेतावनी देता है कि बुरी संगति अच्छे चरित्र को बिगाड़ देती है। ऐसे अस्वस्थ रिश्तों में बने रहना आपके जीवन के लिए परमेश्वर की मर्ज़ी नहीं है।

आप आज़ाद कैसे हों?

यहाँ कुछ कदम दिए गए हैं:

• स्वयं से ईमानदारी से पूछें:

कौन सा रिश्ता मेरी आत्मा की शांति को भंग कर रहा है?

क्या यह व्यक्ति सच में मेरी खुशी और अंदरूनी शांति के लायक है?

• उस सम्बन्ध को कम करने या खत्म करने का फ़ैसला करें।

• बिना किसी डर या अपराधबोध के, हिम्मत से "नहीं" कहना सीखें।

यह रास्ता चुनना स्वार्थी नहीं है—यह स्वयं की देखभाल है।

और इससे भी ज़रूरी बात, यह आपके मानसिक स्वास्थ्य और आध्यात्मिक भलाई की रक्षा करने की दिशा में एक मज़बूत कदम है।

आपका हृदय किसके पास है?

आज, जब हम संसार के साथ घुल-मिल जाते हैं और अपने आस-पास के सभी लोगों की तरह जीते हैं, तो हम भी उन्हीं नाकामियों, निराशाओं और थकावट का सामना करते हैं जिनका वे करते हैं। दुख की बात है कि कई कलीसियाएं भी संसार की नकल करने लगे हैं—उसकी दिखावट, प्राथमिकताओं और जुनून को अपना रहे हैं, और स्वयं परमेश्वर से ज़्यादा सांसारिक चीज़ों में दिलचस्पी ले रहे हैं।

लेकिन यीशु मसीह को देखिए। जब वह इस दुनिया में थे, तो उन्होंने एक विजयी जीवन जिया। क्यों? क्योंकि उन्होंने कभी संसार के हिसाब से स्वयं को नहीं बदला। इसके विपरीत, वह पिता के साथ गहराई से जुड़े रहे, रोज़ उनकी आवाज़ सुनते थे और उनके साथ करीबी संगति में चलते थे। इसी तरह उन्होंने संसार पर जीत हासिल की।

दुनिया जिसे प्रभावशाली और तारीफ़ के लायक समझती है, उसका परमेश्वर की नज़रों में कोई असली मोल नहीं है—असल में, पवित्र शास्त्र कहता है कि वह ऐसी चीज़ों से नफ़रत भी करते हैं। जैसा कि लिखा है: "वह जगत में था, और जगत उसी के द्वारा बनाया गया था, फिर भी जगत ने उसे नहीं पहचाना" (यूहन्ना 1:10)।

अगर आप अभी भी यीशु को पूरी तरह से नहीं जानते हैं, तो यह समय है कि आपकी सोच बदले—आपके मन को नए सिरे से सोचने, बदलने, पूरी तरह से रीसेट होने की ज़रूरत है।

"परिवर्तित हो जाओ" शब्द एक इल्ली के तितली बनने के सफ़र जैसा है। इसके बारे में सोचिए। एक इल्ली ज़मीन पर रेंगती है और बदसूरत दिखती है। लेकिन जब वह तितली बन जाती है, तो वह सुंदर हो जाती है, आसमान में उड़ती है, और उसके जीवन की पूरी क्वालिटी बदल जाती है।

इसी तरह, जब आपका मन संसार और संसार की चीज़ों का पीछा करना बंद कर देता है, और यीशु मसीह को खोजना शुरू कर देता है, तो आपके जीवन का स्तर ऊपर उठ जाएगा।

यह बदलाव रातों-रात नहीं होता। यह एक रोज़ की प्रक्रिया है। हर बार जब आप परमेश्वर के वचन को अपने हृदय में रखते हैं, तो आपका दिमाग नया हो रहा होता है।

उड़ाऊ पुत्र की कहानी देखिए। उसने अपने पिता की संपत्ति का अपना हिस्सा लिया, उसे लापरवाही से जीने में बर्बाद कर दिया, अपनी इच्छाओं का पालन किया, और

आखिरकार सूअरों को खाना खिलाने लगा। संसार से प्रेम करने और अपने पिता को छोड़ने से उसे क्या मिला? दर्द, निराशा, अपराधबोध और शर्म के अलावा कुछ नहीं।

शैतान हमेशा संसार को आकर्षक दिखाता है—लेकिन वह आपको कभी भी अंजाम नहीं दिखाता।

भले ही संसार आज आपसे प्रेम करता हो, आपकी तारीफ़ करता हो, और आपका मनोरंजन करता हो, एक दिन वह आपको छोड़ देगा। लेकिन यह याद रखें: यीशु का प्रेम कभी नहीं बदलता।

सब कुछ खोने के बाद, उड़ाऊ पुत्र को आखिरकार अक्ल आई। उसका मन बदल गया, और वह अपने पिता के पास लौट आया। पिता ने उसे मना नहीं किया। इसके विपरीत, उसने उसे गले लगाया, उसे नए कपड़े पहनाए, उसकी उंगली में अंगूठी पहनाई, पैरों में जूते पहनाए, और उसका सम्मान वापस दिलाया।

ठीक इसी तरह यीशु आज आपकी जीवन परिवर्तित होने का इंतज़ार कर रहे हैं।

अपने आप से कहो, "पाप में जीना बहुत हो गया। अपनी ज़िंदगी को कुछ समय के सुखों में बर्बाद करना बहुत हो गया।" संसार को छोड़ने और यीशु के साथ ज़िंदगी चुनने का फैसला करो। जब तक आप फैसला नहीं करते, परमेश्वर आपकी मदद नहीं कर सकते।

क्या आप अपनी ज़िंदगी की दिशा बदलना चाहते हैं—जहां आप अभी हैं, वहां से कुछ बेहतर की ओर बढ़ना चाहते हैं? तो यह पुकार सुनो:

"इस संसार के सदृश न बनो; परन्तु तुम्हारे मन के नये हो जाने से तुम्हारा चाल-चलन भी बदलता जाए, जिस से तुम परमेश्वर की भली, और भावती, और सिद्ध इच्छा अनुभव से मालूम करते रहो" (रोमियों 12:2) ।

बाइबल हमें साफ-साफ बताती है कि किन चीज़ों से बचना है और किन चीज़ों को अपनाना है:

क्या ही धन्य है वह पुरुष जो दुष्टों की युक्ति पर नहीं चलता, और न पापियों के मार्ग में खड़ा होता; और न ठट्ठा करनेवालों की मण्डली में बैठता है (भजन 1:1)।

यहां तक कि पतरस, एक चेला जिसने दावा किया था कि वह यीशु से अपनी ज़िंदगी से भी ज़्यादा प्रेम करता है, उसने डर के मारे उसका इनकार कर दिया और मछली पकड़ने की अपनी पुरानी ज़िंदगी में लौट गया। उस रात, उसे कुछ नहीं मिला। पूरी रात काम करने के बावजूद, वह खाली हाथ रह गया—सिर्फ निराशा और थकावट।

सुबह, यीशु किनारे पर खड़े थे और उन्होंने कहा, "अपनी जाल नाव के दाहिनी ओर फेंको, और तुम्हें कुछ मिलेगा।" जब उन्होंने बात मानी, तो उन्हें इतनी ज़्यादा मछलियां मिलीं कि वे जाल खींच भी नहीं पाए (यूहन्ना 21:6)।

जब पतरस परमेश्वर से दूर हो गया और संसार में लौट आया, तो उसे नाकामी मिली। लेकिन जब उसने यीशु को अपने हृदय में वापस जगह दी, तो वह फिर से एक कामयाब ज़िंदगी में लौट आया।

एक बिना बदला हुआ मन परमेश्वर के काम में रुकावट बन जाता है। अपने विचारों और हृदय को यीशु की ओर मोड़ो—अभी।

प्रिय नौजवानों,

"संसार और उसकी अभिलाषाएं खत्म हो जाती हैं" (1 यूहन्ना 2:17) । यह संसार कुछ समय के लिए है और खत्म होने वाला है। जो चीज़ें खत्म हो रही हैं, उनसे प्रेम मत करो। इसके बजाय, यीशु से प्रेम करने और उन्हें खोजने का फैसला करो, जो अनंत जीवन देते हैं।

Heart Beat

मैं अपने परिवार में इकलौती बेटी हूँ।

मैं चेन्नई में एक अच्छी कंपनी में अच्छी वेतन पर काम कर रही थी। मेरे दो करीबी मित्र थे। हालाँकि मैं कमा रही थी, मैंने कभी अपने माता-पिता की मदद के लिए घर पैसे नहीं भेजे। मैं अपने हॉस्टल और मेस की फीस स्वयं देती थी, और जो भी बचता था, वह सब मैं स्वयं पर खर्च कर देती थी।

सिर्फ़ इतना ही नहीं—मैं अपने मित्रों की ज़रूरतों पर भी खुलकर खर्च करती थी। जब भी हम खाना खाने या शॉपिंग के लिए बाहर जाते थे, तो हमेशा मैं ही पैसे देती थी। जब भी वे पूछते थे, मैं तुरंत GPay से पैसे भेज देती थी। वे तब तक पूछते रहते थे जब तक मेरे बैंक अकाउंट में ज़ीरो बैलेंस नहीं हो जाता था, और मैंने कभी मना नहीं किया। लेकिन जैसे ही उन्हें पता चला कि मेरे पास पैसे नहीं बचे हैं, उन्होंने मेरे फ़ोन कॉल का जवाब देना भी बंद कर दिया। इससे मुझे सबसे ज़्यादा दुख हुआ।

मेरी गैर-ज़िम्मेदाराना खर्च करने की आदतों की वजह से मेरे माता-पिता ने मुझे बहुत डांटा। आखिरकार, उन्होंने मुझसे नौकरी छोड़ने और घर वापस आकर उनके साथ रहने के लिए कहा। इसलिए मैंने इस्तीफ़ा दे दिया और केरल वापस आ गई। अब, बहुत कोशिश करने के बावजूद, मुझे दूसरी नौकरी नहीं मिल पाई है और मैं बहुत मुश्किल में हूँ।

मेरे माता-पिता मुझसे बार-बार कहते रहते हैं कि मैं बेकार हूँ, मैं किसी काम की नहीं हूँ और मैं उन्हें सिर्फ़ दुख देती हूँ। मैं पूरी तरह से थकी हुई महसूस कर रही हूँ। मुझे अब घर पर रहना अच्छा नहीं लगता।

क्या अपने मित्रों की आर्थिक मदद करना गलत था? मैंने उनसे सच में प्रेम बदले में कुछ भी उम्मीद किए बिना। लेकिन आज, मेरे पास कुछ नहीं है—खाली और टूटी हुई। अब मुझे क्या करना चाहिए? भविष्य का क्या होगा? क्या मैं फिर से उठ सकती हूँ? क्या अभी भी ज़िंदगी में कुछ हासिल कर सकती हूँ?

— सोफ़िया, केरल

प्रिय बहन सोफ़िया,

आपका दर्द और थकान हम समझते हैं। जब वही माता-पिता जिन्हें प्रेम से बात करनी चाहिए, ऐसे शब्द बोलते हैं जो आपको चोट पहुँचाते हैं, और जब वे मित्र जिन्होंने आपकी दरियादिली का फ़ायदा उठाया, वे आपके फ़ोन कॉल का जवाब भी नहीं देते, तो आप स्वार्थी रिश्तों के बीच फँस जाती हैं—बिना सच्चे प्रेम के, बिना सच्ची मित्रता के, और अकेलेपन में डूब जाती हैं।

सोफ़िया, आपका नरम और उदार दिल जो दूसरों की मदद करना पसंद करता है, बहुत सुंदर है। लेकिन आपको यह सच्चाई भी पहचाननी चाहिए: पैसे संभालने में समझदारी की कमी ही आपकी मौजूदा मुश्किलों के पीछे मुख्य कारणों में से एक है।

आज, बहुत से युवा कमाना जानते हैं—लेकिन बहुत कम लोग जानते हैं कि जो कमाते हैं उसे कैसे मैनेज करें। स्कूल और कॉलेज तक, हम सिर्फ़ पॉकेट मनी खर्च करते हैं। लेकिन एक बार जब नौकरी शुरू हो जाती है और पहली सैलरी हाथ में आती है, तो बहुत से लोगों को पता नहीं होता कि कहाँ रुकना है—कितना खर्च करना है, कहाँ खर्च करना है, और किन चीज़ों से बचना है।

आपकी हालत देखकर, सोफिया, बाइबिल की एक कहानी याद आती है—उड़ाऊ पुत्र की।

उसने अपनी विरासत ली, गलत फैसलों ने उसे बर्बाद कर दिया, और आखिर में उसके पास कुछ नहीं बचा। लेकिन जिस पल उसे होश आया और उसने अपने पिता के पास लौटने का फैसला किया, उसकी ज़िंदगी में एक बड़ा बदलाव आया। उसने वह सब वापस पा लिया जो उसने खो दिया था।

इसी तरह, सोफिया, तुम भी फिर से उठ सकती हो। तुम्हें नौकरी मिल जाएगी। तुम बेकार नहीं हो, चाहे कोई कुछ भी कहे। तुम अभी भी सफल हो सकती हो।

अभी तुम्हें फैसले लेने और चुनाव करने की हुनर की ज़रूरत है। यही असली संघर्ष है जिसका सामना आज बहुत से युवा करते हैं। तुम्हारे पास एक अच्छी नौकरी और अच्छा वेतन था, और तुम्हारे माता-पिता ने तुमसे पैसे नहीं मांगे—लेकिन तुम्हें स्वयं नहीं पता चला कि वे सब कहाँ चले गए। और अब, तुम्हारी जेबें खाली हैं।

तुम्हारी मुख्य समस्या गलत फैसलों और अस्पष्ट निर्णयों में है। तुम्हें तय करना होगा कि किस तरह के लोग तुम्हारी ज़िंदगी में आने के लायक हैं। तुम्हारा स्तर क्या है? तुम क्या करोगी—और तुम कभी क्या नहीं करोगी?

अगर पहले ऐसी स्पष्टता होती, तो तुम कई गलत रास्तों पर नहीं चलतीं या बेवजह पैसे खर्च नहीं करतीं।

यहां तक कि जब तुम अपना गृहनगर छोड़ती हो या दूसरे राज्य में जाती हो, तो भी साफ-साफ क्या करना है और क्या नहीं करना है, यह जानना ज़रूरी है। तुम्हें पहले से तय करना होगा कि अपनी ज़िंदगी को खराब करने वाली किसी भी चीज़ को कैसे ना कहना है। पक्के फैसलों के बिना, बहुत से लोग फिसल जाते हैं, गिर जाते हैं, और फिर से उठने की हिम्मत नहीं जुटा पाते।

सोफिया, तुम्हें ये कुछ कदम उठाने होंगे:

- अपने हृदय में तय करो कि तुम उठ सकती हो और तुम सफल होगी। तुम्हारी सोच ही सुधार की दिशा में पहला कदम है।
- अगर तुम कोशिश करती रहोगी, तो तुम्हें केरल में एक अच्छी नौकरी मिल सकती है। हार मत मानो। सही मिल समझदारी से चुनो।
- ऐसी किसी भी चीज़ से दूर रहने का पक्का फैसला करो जो तुम्हारे चरित्र को खराब करती है।
- योजना बनाओ कि तुम अपना वेतन कैसे खर्च करोगी। तय करो कि पाप वाली या फालतू चीज़ों पर पैसे बर्बाद नहीं करोगी।
- बचत करने की आदत डालो—यह तुम्हारे भविष्य और तुम्हारी शादी के लिए भी फायदेमंद होगा।

अगर तुम ये बदलाव अपनाती हो, तो तुम्हारी ज़िंदगी फिर से खिल सकती है।

सोफिया, दानिएल नाम के एक जवान व्यक्ति द्वारा लिए गए साफ़ फ़ैसलों ने उसे एक पवित्र जीवन जीने और हर चुनौती के बीच मज़बूती से खड़े रहने में मदद की। जिस परमेश्वर ने दानिएल की मदद की, वही आपकी भी मदद करेगा।

परमेश्वर की दी हुई समझदारी और साफ़ फ़ैसले ही आपको सबसे ऊपर ले जाएँगे।

नुकसान के बीच धीरज

हम उन्हें जो सहनशील हैं धन्य कहते हैं। आपने अय्यूब के धीरज के बारे में सुना है, और आपने देखा है कि प्रभु ने उसकी कहानी कैसे पूरी की—प्रभु कैसे तरस और करुणा से भरे हुए हैं (याकूब 5:11)।

धर्मग्रंथ स्वयं अय्यूब के धीरज के विषय में गवाही देता है। क्योंकि अय्यूब ने धीरज चुना, प्रभु ने उसे पुनःस्थापित किया और उसे दोगुना आशीष दिया।

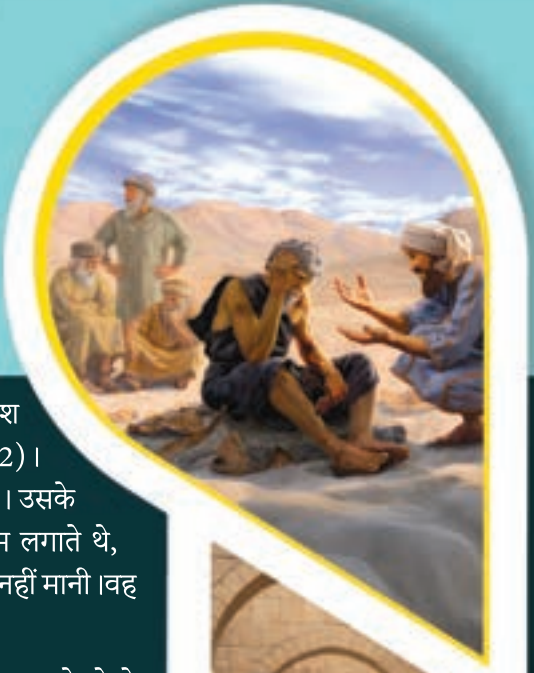

बाइबल हमसे आग्रह करती है: "आशा में आनन्दित रहो; क्लेश में स्थिर रहो; प्रार्थना में नित्य लगे रहो।" (रोमियों 12:12)। अय्यूब ने इस वचन को जिया। वह दुख में भी धीरज रखता था। उसके आस-पास के लोग उसका मज़ाक उड़ाते थे, उस पर इल्ज़ाम लगाते थे, उसकी ईमानदारी पर सवाल उठाते थे—लेकिन अय्यूब ने हार नहीं मानी।वह स्थिर रहा।

यीशु ने भी धीरज रखा। जब उन्होंने उसे दुष्टआत्मा-ग्रस्त कहा, उसके चेहरे पर थूका, और उसके सिर पर कांटों का ताज पहनाया, तब भी वह धीरज रखता रहा। फिर भी जब बात हमारी आती है, तो हम थोड़ी सी भी तकलीफ़ सहने के लिए संघर्ष करते हैं। शादी के तीन महीने बाद ही लोग यह कहने को तैयार हो जाते हैं, "मुझे यह पति नहीं चाहिए" या "मुझे यह पत्नी नहीं चाहिए" और तलाक की तरफ भागते हैं—सिर्फ इसलिए क्योंकि उनमें धीरज नहीं होता।

हमें दुख में धेर्य सीखना होगा। पारिवारिक जीवन में तनाव, पीड़ा और समस्या होंगी। माता-पिता को अपने बच्चों को यह सच सिखाना चाहिए: धीरज रखना वैकल्पिक नहीं है। अपने सबसे बुरे समय में भी, अय्यूब ने धीरज चुना।

अय्यूब 42:5–6 में, अय्यूब कहते हैं, "मैं ने कानों से तेरा समाचार सुना था,

परन्तु अब मेरी आँखें तुझे देखती हैं। इसलिये मैं अपने ही विषय घृणित समझता हूँ, और धूलि और राख में पश्चात्ताप करता हूँ।" अय्यूब एक ऐसा मनुष्य था जिसने परमेश्वर का सामना किया। वह सिर्फ परमेश्वर के बारे में सुनने से आगे बढ़कर उन्हें देखने लगा।

निर्गमन 33:18 में, मूसा प्रार्थना करता है, "मुझे अपनी महिमा दिखा।" परमेश्वर उत्तर देते हैं, "कोई भी मेरा चेहरा देखकर ज़िंदा नहीं रह सकता। लेकिन क्योंकि तुम इतनी भूख से मांग रहे हो, चट्टान की दरार में खड़े हो जाओ। जब मैं गुज़रूंगा, तो तुम मेरी पीठ देखोगे।"

जो परमेश्वर पुराने नियम में नहीं दिख सकते थे, उन्होंने स्वयं को नए नियम में यीशु के ज़रिए दिखाया। प्रेरितों के काम 9 में, यीशु शाऊल को दिखाई देते हैं और कहते हैं, "मैं यीशु हूँ, जिसे तुम सता रहे हो।" शाऊल ने यीशु को देखा। फिर, प्रेरितों के काम 22:17 में, पौलुस लिखते हैं कि आराधनालय में प्रार्थना करते समय, उन्होंने प्रभु को देखा। हाँ—यीशु को देखा जा सकता है।

जब अय्यूब ने अपने मित्रों के लिए प्रार्थना की, तो प्रभु ने उसकी तकदीर बदल दी और उसे पहले से दोगुना दिया (अय्यूब 42:10)। इस पर ध्यान दें: अय्यूब ने कैद में रहते हुए भी दूसरों के लिए प्रार्थना की। अय्यूब 42:7–8 में, परमेश्वर का क्रोध अय्यूब के मित्रों पर भड़क उठा। उन्हें बचाने के लिए, अय्यूब ने बीच-बचाव किया। प्रभु ने कहा कि वह उन्हें माफ कर देंगे क्योंकि उन्होंने अय्यूब की प्रार्थना स्वीकार कर ली थी।

अय्यूब ने यह नहीं कहा, "मैं अभी भी दुखी हूँ—मैं दूसरों के लिए कैसे प्रार्थना कर सकता हूँ? पहले मुझे ठीक करो।" नहीं। जब अय्यूब को एहसास हुआ कि परमेश्वर का क्रोध उसके मित्रों पर है, तो वह चिल्लाया, "प्रभु, उन्हें माफ कर दो।" परमेश्वर ने अय्यूब का चेहरा देखा, उसके मित्रों को माफ कर दिया, और तुरंत अय्यूब की बन्धुआई को बदल दिया। जब आप दूसरों के लिए प्रार्थना करते हैं, तो परमेश्वर आपकी ओर देखते हैं।

आज, हमारे देश में बहुत से लोग परमेश्वर के मन को दुख: देते हैं। पाप की वजह से, परमेश्वर का क्रोध भूमि पर है। फिर भी परमेश्वर कहते हैं, "अगर तुम प्रार्थना करोगे, तो मैं क्षमा कर दूँगा।" जब हम उनके सामने खड़े होकर मध्यस्ता करते हैं — "परमेश्वर, मेरे लोगों को क्षमा कर दो। उनकी नासमझी को क्षमा कर दो। उनके पापों को क्षमा कर दो। मैं उनके लिए खड़ा हूँ"—परमेश्वर देश पर आने वाले न्याय को टाल देते हैं।

जैसे परमेश्वर ने अय्यूब की बन्धुआई बदल दी क्योंकि उसने अपने दर्द के बीच दूसरों के लिए मध्यस्ता किया, वैसे ही वह आपकी बन्धुआई भी बदल देंगे—और आपको दोगुना आशीष देंगे।

रुको। धीरज रखो। प्रार्थना करते रहो। आपका बदलाव जितना आप सोचते हैं उससे कहीं ज़्यादा करीब है...!

वे लोग जिन्होंने परमेश्वर को प्रसन्न किया

दाऊद

दाऊद एक ऐसा मनुष्य था जिसने सच में परमेश्वर को प्रसन्न किया।

वह सुबह जल्दी उठकर परमेश्वर को खोजता था। उसका हृदय परमेश्वर के वचन के लिए उत्साह से भरपूर था, और क्योंकि वह उससे बहुत प्रेम करता था, इसलिए वह उसके हिसाब से जीना चाहता था। उसने इस तरह राज किया जिससे परमेश्वर का आदर होता था—और इसीलिए परमेश्वर दाऊद से बहुत प्रसन्न रहता था।

दाऊद सही काम करने के लिए जाना जाता था। अपनी ज़िंदगी की शुरुआत से लेकर आखिर तक, वह पूरे हृदय से परमेश्वर से प्रेम करता था। हाँ, उसने कभी-कभी गलतियाँ कीं—लेकिन वह कभी उनमें फंसा नहीं रहा। जिस पल उसे अपनी नाकामी का एहसास हुआ, उसने पछतावा किया, परमेश्वर से माफ़ी माँगी, और परमेश्वर की हज़ुरी में लौट आया। उसके ऐसे समर्पित हृदय की वजह से, परमेश्वर ने दाऊद को ऊँचा उठाया और उसे इज़राइल का राजा बनाया।

प्रिय नौजवानों, जब आप दाऊद की तरह परमेश्वर से प्रेम करने का फैसला करते हैं, तो परमेश्वर आपको भी ज़रूर ऊँचा उठाएंगे।

अय्यूब

असहनीय कष्टों के बीच—दर्द, तकलीफ़, बेइज़्ज़ती, अपने बच्चों को खोना, अपनी संम्पत्ति खोना, और यहाँ तक कि गंभीर बीमारी—अय्यूब अपने विश्वास में मज़बूत रहा। उसने हर मुश्किल को सयंम से सहा। सब कुछ खोने के बाद भी, वह परमेश्वर से दूर नहीं गया।

इसके विपरीत, उसने परमेश्वर की धार्मिकता और प्रेम पर भरोसा किया और वफ़ादार रहा। अय्यूब एक धर्मी पुरुष था जो परमेश्वर से डरता था और उनके बताए रास्तों पर चलता था। और अंत में, परमेश्वर ने अय्यूब का खोया हुआ सब कुछ वापस दिलाया—और उसे दोगुना आशीष दिया।

प्रिय नौजवानों, जीवन में चाहे कुछ भी खो दो, यीशु के लिए अपना प्रेम कभी मत खोना। जब तुम उन्हें प्रसन्न करते रहना चुनते हो, तो परमेश्वर तुम्हें दोगुना आशीष देंगे।

वे लोग जिन्होंने परमेश्वर को प्रसन्न नहीं किया

अम्नोन

अम्नोन अपनी ही बहन के लिए हवस में डूबा हुआ था। धोखे और चालाकी से, उसने अपनी पापमय लालसा को पूरा करने के लिए ध्यानपूर्वक तरीके बनाए। उसने अपनी मासूम बहन तामार को गलत काम करने के लिए मजबूर किया और उसके साथ गलत काम किया। जैसे ही उसकी लालसा पूरी हुई, तथाकथित "प्रेम" तुरंत नफ़रत में बदल गया—उस लालसा से भी ज़्यादा मज़बूत जिसका उसने कभी दावा किया था। अपने स्वार्थ के लिए उसका इस्तेमाल करने के बाद, उसने बेरहमी से उसे भगा दिया।

प्रिय नौजवानों, अम्नोन की तरह मत बनो—हवस भरे पापों में पड़कर परमेश्वर को नाराज़ मत करो। अपने मन की रक्षा करो। पवित्रता चुनो। ऐसा जीवन चुनो जो परमेश्वर का सम्मान करे।

फरीसी

एक फरीसी और एक चुंगी लेनेवाला प्रार्थना करने के लिए आराधनालय गए। फरीसी एक बहुत धार्मिक झुंड से था। पूरे भरोसे के साथ खड़े होकर, उसने गर्व से परमेश्वर के सामने अपने अच्छे कामों का बखान किया:

"परमेश्वर, मैं आपका धन्यवादी हूं कि मैं पापियों या व्यभिचारियों जैसा नहीं हूं। मैं हफ्ते में दो बार उपवास करता हूं और अपनी कमाई का दशवां भाग देता हूं। मैं पास खड़े इस चुंगी लेने वाले से कहीं ज़्यादा धर्मी हूं। मुझे बचा लो।"

लेकिन चुंगी लेनेवाले ने स्वयं को अयोग्य जाना। वह दूर खड़ा रहा, घुटनों के बल बैठ गया, अपनी आंखें आसमान की तरफ भी नहीं उठा सका, और अपनी छाती पीटते हुए चिल्लाया, "परमेश्वर, मुझ पापी पर दया करो।"

परमेश्वर चुंगी लेने वाले की प्रार्थना से प्रसन्न हुए, और वह धर्मी ठहरकर अपने घर गया। लेकिन परमेश्वर फरीसी से प्रसन्न नहीं थे, जो घमंड और स्वयं को सही समझता था। (लूका 18:10–14)

प्रिय नौजवानों, कुछ लोग फरीसी की तरह प्रार्थना करते हैं—अपनी धार्मिकता की शेखी बघारते हैं। दूसरे स्वयं को नम्र करते हैं, परमेश्वर की दया के लिए रोते हैं, मसीह की धार्मिकता पाते हैं, और उजियाले में चलते हैं।

आप इनमें से कौन हैं?

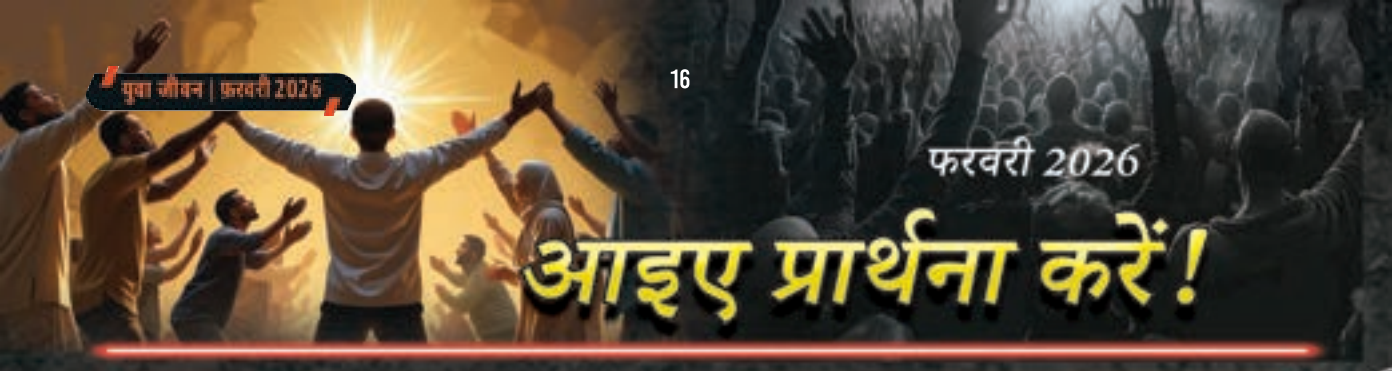

फरवरी 2026

आइए प्रार्थना करें!

नशा

आइए, ड्रग्स, गोलियों और इंजेक्शन पर पूरी तरह से रोक लगाने और उनके विनाशकारी प्रभावों के बारे में बड़े पैमाने पर जागरूकता फैलाने के लिए पूरी लगन से प्रार्थना करें। विशेष तौर से, आइए हम उन बच्चों और युवाओं के लिए प्रार्थना करें - जिन्हें प्रभु जानते हैं और चुना है - जो नशे की लत में फंसे हैं, कि परमेश्वर उन्हें बचाए, ठीक करे और पूरी तरह से आज़ाद करे।

अंतिम समय के संकेत

आधिकारिक मौसम एजेंसियों के अनुसार, सिर्फ पांच महीनों (जुलाई-नवंबर) में, तुर्की, इंडोनेशिया, जापान, फिलीपींस, अफगानिस्तान और प्रशांत महासागर सहित 13 क्षेत्रों में 1,280 से ज़्यादा हल्के से मध्यम भूकंप दर्ज किए गए हैं। जैसे-जैसे हम अपनी आँखों के सामने इन अंतिम समय के संकेतों को देखते हैं, आइए हम आध्यात्मिक बोझ और समझ के साथ प्रार्थना करें।

खेलों में डोपिंग संकट

वर्ल्ड एंटी-डोपिंग एजेंसी (WADA) द्वारा जारी 2024 की रिपोर्ट के अनुसार, भारत प्रतिबंधित परफॉर्मेंस-बढ़ाने वाले पदार्थों का इस्तेमाल करने वाले देशों में लगातार तीसरे साल पहले स्थान पर रहा है। आइए इस खतरनाक स्थिति में बड़े बदलाव और ईमानदारी बहाल होने के लिए प्रार्थना करें।

फेफड़ों की बीमारियाँ

विश्व स्तर पर, लगभग 45 करोड़ लोग - दुनिया की आबादी का लगभग 7% - फेफड़ों की सूजन वाली बीमारियों से प्रभावित हैं। हर साल, इन बीमारियों के कारण लगभग 4 करोड़ लोगों की जान चली जाती है। प्रार्थना करें कि प्रभु पूरी तरह से ठीक होने का आदेश दें और इन बीमारियों से पीड़ित सभी लोगों में नया जीवन डालें।

टाइप 1 डायबिटीज से जूझ रहे बच्चे

आइए भारत भर में 9 लाख बच्चों के लिए परमेश्वर के चंगाई भरे स्पर्श के लिए प्रार्थना करें, जिसमें तमिलनाडु के 15,000 बच्चे भी शामिल हैं, जो टाइप 1 डायबिटीज से प्रभावित हैं। प्रभु उनके स्वास्थ्य को बहाल करें और उनके परिवारों को मज़बूत करें।

नशे की लत में फंसे युवा

स्कूल और कॉलेज के छात्रों में नशे की लत तेज़ी से बढ़ रही है। कई युवा जीवन बर्बाद हो रहे हैं - शरीर खराब हो रहे हैं, भविष्य खत्म हो रहे हैं, और जीवन छोटे हो रहे हैं। आइए हम प्रार्थना करें कि प्रभु इन युवाओं को नशे की लत की गिरफ्त से शक्तिशाली रूप से बचाएँ और उन्हें जीवन और आशा की ओर ले जाएँ।

बाल तस्करी

आइए हम प्रार्थना करें कि बच्चों को अगवा करने और उनसे ज़बरदस्ती मज़दूरी करवाने वाले गिरोहों का पर्दाफाश हो और उन्हें गिरफ्तार किया जाए, बच्चों को बचाया जाए, और इस अमानवीय अपराध में शामिल लोगों के खिलाफ सख्त कानून लागू किए जाएँ।

संकट में किसान

अकेले महाराष्ट्र में, पिछले साल सितंबर से नवंबर के बीच 766 किसानों ने आत्महत्या कर ली। प्रार्थना करें कि सरकार प्रभावी कदम उठाए और जानमाल के इस दुखद नुकसान को रोका जा सके। किसानों में फिर से उम्मीद जगे।

दुनिया भर में सताए गए मसीही

पूरी दुनिया में, 26 करोड़ मसीही सिर्फ़ यीशु को मानने के लिए गंभीर उत्पीड़न का सामना करते हैं। हर नौ में से एक मसीही को बहुत ज़्यादा दुख झेलना पड़ता है, और हर दिन 11 विश्वासियों को उनके विश्वास के लिए मार दिया जाता है। आइए प्रार्थना करें कि उत्पीड़न खत्म हो और परमेश्वर की सुरक्षा और शांति उनके लोगों को घेरे रहे।

भारत में युवाओं में बेरोज़गारी

भारत में दुनिया की सबसे ज़्यादा युवा आबादी है, फिर भी नौकरियों के मौके उनकी संख्या के हिसाब से नहीं हैं। नौकरी करने लायक युवाओं में से सिर्फ़ 40% ही अभी काम कर रहे हैं, जबकि 30% से ज़्यादा बेरोज़गार हैं। अध्ययनों से पता चलता है कि बेरोज़गारी एक बड़ी चिंता का विषय है, खासकर मध्यम वर्ग के युवाओं के बीच। CMIE के आंकड़ों के अनुसार, शहरी बेरोज़गारी बढ़कर 8.4% और ग्रामीण बेरोज़गारी 7.5% हो गई है। आइए प्रार्थना करें कि युवाओं को उनकी शिक्षा और कौशल के अनुसार नौकरियाँ मिलें, और अवसरों के द्वार खुलें।

आइए प्रार्थना में एक साथ खड़े हों - विश्वास करते हुए, उम्मीद करते हुए, और परमेश्वर पर भरोसा करते हुए कि वह हमारी पीढ़ी में सामर्थी रूप से काम करेगा।

चमकते जाल और परमेश्वर का प्रकाश

बारिश का मौसम बीत चुका है, और हम सर्दियों के अंत के करीब हैं। नहरें अतिप्रवाहीत हो रही हैं, खेत पानी से भरे हैं, और फसलें हरी-भरी उग रही हैं—यह बहुतायत का मौसम है।

साथ ही, यह ऐसा मौसम भी है जब फफूंदी और कीड़े तेजी से बढ़ते हैं।

क्योंकि कीड़े फसलों को बर्बाद कर सकते हैं, इसलिए किसान कभी-कभी रात में अपने खेतों के बीच में एक दीपक लटका देते हैं। चमक से आकर्षित होकर, कीड़े रोशनी की ओर दौड़ते हैं, दीपक से टकराते हैं, और उसकी गर्मी से मर जाते हैं। सुबह तक, हजारों बेजान कीड़ों के शरीर उसके नीचे बिखरे पड़े होते हैं।

जब हम रुककर सोचते हैं—ये कीड़े सामूहिक रूप से अपनी मौत की ओर क्यों दौड़े?—तो जवाब साफ हो जाता है: वे रोशनी से आकर्षित हुए थे। विज्ञान इसे कई सिद्धांतों से समझा सकता है, लेकिन अगर वे थोड़े और सावधान होते, तो वे ऐसी असमय मौत से बच सकते थे। दूसरे कीड़ों को अपनी आँखों के सामने गिरते और मरते देखने के बाद भी, वे अपना रास्ता नहीं बदल पाए। एक-एक करके, उन्होंने उसी रास्ते का पालन किया और उसी अंजाम तक पहुँचे।

जीवन भी काफी हद तक इसी तरह काम करता है। कई बार, संसार की चमक हमें अपनी ओर खींचती है। जो लोग उस रोशनी द्वारा दिखाए गए रास्ते का पीछा करते हैं, वे अक्सर एक गहरे, विनाशकारी गड्ढे में गिर जाते हैं।

इंसानों को हमेशा किसी न किसी तरह के आकर्षण की ज़रूरत होती है। और जब बात जवानी की आती है, तो विपरीत लिंग के प्रति आकर्षण हलवा खाने जितना लुभावना लग सकता है। 50 ग्राम से ज़्यादा हलवा खाओ, तो वह बीमार करने लगता है—कुछ दुर्लभ अपवाद हो सकते हैं। लेकिन विपरीत लिंग के प्रति आकर्षण, चाहे वह कितने भी समय तक रहे, उसकी मिठास कभी कम नहीं होती। और ठीक यहीं शैतान अपना जाल बिछाता है—जैसे खेत के बीच में एक चमकदार दीपक, जैसे कांटे पर चारा। आखिर में, बड़ी मछली जो चारे की लालच करती है, वह फांसी के फंदे पर लटके कैदी की तरह तड़पती है।

संसार की चकाचौंध भरी रोशनी में आकर्षण के रूप में इच्छा होती है, लेकिन उसमें सच्चे प्रेम की गहराई कभी नहीं होती।

अब, मेरे साथ इसकी कल्पना करें: एक विशाल बाज़ार की तस्वीर बनाएं जहाँ अलग-अलग तरह के प्रेम बेचे जा रहे हैं। हम उसमें जाते हैं, सच्चा प्रेम खोजने और उसके लिए सही कीमत चुकाने के लिए दृढ़ संकल्पित।

पहली दुकान में, एक पुरुष और एक महिला के बीच प्रेम दिखाया जा रहा है। जब हम यह देखने के लिए इसकी बारीकी से जांच करते हैं कि यह शुद्ध है या नहीं, तो हम पाते हैं कि यह कई अशुद्धियों से मिला हुआ है। इसे शर्तों के साथ बेचा जाता है, और ज़्यादातर यह नाज़ुक होता है और आसानी से टूट जाता है। कुछ बेहतर खोजने का फ़ैसला करके, हम आगे बढ़ते हैं।

अगली दुकान में, भाई-बहन का प्रेम बेचा जा रहा है। पहली नज़र में, यह असली लगता है, लेकिन समय के साथ, यह भी दूषित हो जाता है। और आगे बढ़ने पर, हमें मित्रता बिकती हुई मिलती है। "यह उम्मीद जगाने वाला लग रहा है," हम सोचते हैं। लेकिन जब इसकी परीक्षा ली जाती है, तो यह प्रेम भी आखिरकार अपनी सीमाएँ और समझौते दिखाता है।

ऐसी सात दुकानों से गुज़रने के बाद, हम आठवीं दुकान में प्रवेश करते हैं। वहाँ, हम एक ऐसा प्रेम देखते हैं जो शुद्ध, सुंदर और अविश्वसनीय रूप से गहरा दिखता है। लेकिन उसके ऊपर एक साइन लटका हुआ है: "बिक्री के लिए नहीं।"

हमारा हृदय बैठ जाता है। अगर ऐसा प्रेम खरीदा नहीं जा सकता, तो उसे क्यों दिखाया जाए?

और फिर, उस प्रेम का मालिक आगे आता है और कहता है, "इसे मुफ़्त में ले लो।"

हैरानी में, हम ऊपर देखते हैं—और हम उसका चेहरा देखते हैं।

सूली पर चढ़ाए गए व्यक्ति का गहरा लाल चेहरा हमारे मनों में गहराई से देखता है, ऐसे हृदय जो टूटे हुए विचारों और असफलताओं से भरे हैं। उसी पल, अगर हम घुटनों पर गिरकर आत्मसमर्पण करते हैं, रोते हुए, "मुझ पर, एक पापी पर दया करो। मेरे पापों को माफ़ करो," तो वह हमारे जीवन में महान मार्गदर्शक प्रकाश के रूप में प्रवेश करता है।

वह प्रेम जिसे खरीदा नहीं जा सकता, वह प्रेम जिसकी कोई कीमत नहीं लगाई जा सकती, हमारे छोटे हृदयों से टूटे हुए बांध की तरह बहने लगता है। उसका तेजस्वी चेहरा वह दिव्य प्रकाश बन जाता है जो हमारे रास्ते को दिखाता है, हमारे पैरों के लिए एक दीपक। यह वह जानलेवा दीपक नहीं है जो पतंगों को मारता है—यह पूर्ण प्रेम का वह नेक प्रकाश है जो जीवन के मार्ग को रोशन करता है।

प्रिय मित्रों, यह संसार मीडिया और प्रभाव के माध्यम से हर दिन लगातार हमारे सामने सस्ती इच्छाओं और सतही सुखों को धकेलती है। विनाश में घसीटे जाने से बचने का केवल एक ही तरीका है। यह उस व्यक्ति की आवाज़ के सामने समर्पण करने से शुरू होता है जिसने कहा, "मैं ही मार्ग, सत्य और जीवन हूँ।"

काश वह समर्पण एक बीज के रूप में अंकुरित हो, एक पौधा बने, एक पेड़ बने, एक विशाल जंगल में बदल जाए, और अंत में ऐसा फल दे जो आपके पूरे जीवन को प्रचुरता से भर दे।

ईश्वरों का ईश्वर हमेशा आपके साथ साथ चले।

मारानाथा!

Teen Zone

नोटिफ़िकेशन

अरुण अपनी स्टडी टेबल पर एक खुली किताब के साथ बैठा था... लेकिन उसका मन? पूरी तरह से फ़ोन पर लगा हुआ था।

व्हाट्सएप(WhatsApp) पिंग्स।

इन्सटाग्राम(Instagram) नोटिफ़िकेशन।

"किसी ने आपकी पोस्ट लाइक की।"

"एक नई रील सिर्फ आपके लिए।"

हर नोटिफ़िकेशन धीरे-धीरे उसे स्टडी टेबल से दूर खींच रहा था—धीरे-धीरे।

"मैं बस तीन मिनट स्क्रॉल करूँगा और फिर पढ़ाई पर वापस आ जाऊँगा," उसने स्वयं से कहा।लेकिन वे तीन मिनट तीन घंटे में बदल गए।एक पूरा पढाई सत्र—खत्म।

ऐसे ही दिन बीतते गए।उसके मार्क्स कम हो गए।उसकी रैंक गिर गई।एक तरफ, उसे पछतावा खाए जा रहा था।दूसरी तरफ, वह स्क्रॉल करना बंद नहीं कर पा रहा था।

मैं ऐसा क्यों हूँ?यह सवाल उसके मन में और भारी होता गया।एक दिन, अरुण फ़ोन चार्ज करना भूल गया।बैटरी: 1%।ठीक उसी समय—पावर कट।

"अरुण, आज कट लगा है। शाम 6 बजे तक बिजली नहीं आएगी," उसकी माँ ने आवाज़ दी।इससे वह और ज़्यादा चिढ़ गया।वह अपने

फ़ोन के बिना थोड़ी देर भी नहीं रह सकता था।फिर बैटरी खत्म हो गई।फ़ोन बंद हो गया।

उस अचानक सन्नाटे में, एक सच्चाई उसे ज़ोर से लगी।वह हृदय जो कई दिनों से शांत था, आखिरकार बोलने लगा।पढ़ाई का डर।माता-पिता का दबाव।मित्रों से तुलना।

मैं बस बचने के लिए सोशल मीडिया स्क्रॉल कर रहा हूँ, उसे एहसास हुआ।मैं आभासी दुनिया में डूब रहा हूँ क्योंकि मैं असली दुनिया का सामना करने से डरता हूँ।यह एहसास उसके लिए बदलाव का क्षण बन गया।उस दिन से, एक छोटे से फ़ैसले ने सब कुछ बदल दिया:"नोटिफ़िकेशन बंद। पढ़ाई चालू।"

दस मिनट की पढ़ाई धीरे-धीरे तीस मिनट हो गई।तीस मिनट एक घंटा हो गए।उसका मन शांत हो गया।उसका फ़ोकस मज़बूत हो गया।दिन-ब-दिन, अरुण को अपने विषयों में मज़ा आने लगा।जब रिज़ल्ट आया, तो वह सिर्फ़ पास ही नहीं हुआ—उसका नाम टॉपर लिस्ट में था।

आखिरकार, अरुण को एक बात गहराई से समझ में आई:असली समस्या फ़ोन के नोटिफ़िकेशन नहीं थे।असली समस्या यह थी कि उसके अंदर के नोटिफ़िकेशन शांत हो गए थे।

परमेश्वर का शब्द।परमेश्वर द्वारा याद दिलाना।परमेश्वर की धीमी आवाज—वे सब उसके दिमाग के शोर में डूब गए थे।

तो उसने एक और फैसला लिया:"पहला नोटिफिकेशन परमेश्वर का है।"

अपना फ़ोन खोलने से पहले, उसने बाइबिल का एक वचन खोला।स्क्रॉल करने से पहले, वह थोड़ी देर प्रार्थना के लिए रुका।

वह उसकी ताकत का ज़रिया बन गया।उसकी स्पष्टता।उसका ध्यान।और बाकी सब कुछ अपने आप ठीक होने लगा।जब उसका आध्यात्मिक ध्यान स्थिर हो गया,तो उसके अंक, अनुशासन और आत्मविश्वास अपने आप बढ़ने लगे।

जब हमारे हृदयों में बहुत सारी आवाज़ें गूंजती हैं, तो परमेश्वर बात नहीं कर पाते।वह शांत पलों का इंतज़ार करते हैं—बस आप और वह।जब आप उन्हें वह जगह देते हैं,तो वह आपकी पढ़ाई, आपके भविष्य और आपकी पूरी ज़िंदगी को सही रास्ते पर ले जाएंगे।

समाचार

पिछले साल दिल्ली में साइबर ठगी से 1,250 करोड़ रुपये का नुकसान!

पिछले एक साल में ही दिल्ली क्षेत्र में साइबर ठग गिरोहों ने आम लोगों से करीब ₹1,250 करोड़ की ठगी की है। हाल के वर्षों में ऑनलाइन धोखाधड़ी के मामलों में लगातार बढ़ोतरी हो रही है।

दिल्ली पुलिस के एक वरिष्ठ अधिकारी के अनुसार, 2024 में साइबर अपराध सिंडिकेट्स ने दिल्ली क्षेत्र में लोगों से लगभग ₹1,100 करोड़ की ठगी की। इन गिरोहों के अधिकांश सदस्य कंबोडिया, वियतनाम और लाओस जैसे देशों से काम कर रहे थे और वे चीनी हैंडलरों के निर्देश पर गतिविधियां चला रहे थे।

2025 में दिल्ली क्षेत्र में इन गिरोहों द्वारा ठगी गई कुल राशि बढ़कर ₹1,250 करोड़ हो गई। हालांकि एक सकारात्मक पहलू यह है कि बरामद की गई राशि में भी वृद्धि हुई है। जहां 2024 में ठगी गई राशि का केवल 10% ही वापस मिल पाया था, वहीं 2025 में यह आंकड़ा बढ़कर 24% हो गया।

अनुमान है कि 2025 में देशभर में साइबर ठगी गिरोहों ने लोगों से लगभग ₹20,000 करोड़ की ठगी की होगी। अधिकारी ने बताया कि यह राशि किसी पूरे राज्य के वार्षिक बजट के बराबर है।

एक इतिहास जो सपनों से लिखा गया!!

मेरे सभी प्रिय युवा सफल व्यक्तियों को हार्दिक शुभकामनाएँ!
हम अपने सपनों और लक्ष्यों में जो आज समय लगाते हैं, वही हमें कल दुनिया के सामने चमकाएगा। जो लोग उन्हें मिले हर मिनट का इस्तेमाल फोकस और अनुशासन के साथ करते हैं, वही आखिरकार ऐसे सफल व्यक्ति बनते हैं जिनके बारे में दुनिया बात करना बंद नहीं कर पाती। ऐसा ही एक प्रेरणादायक उदाहरण हैं जेमिमा रोड्रिग्स।

जेमिमा का जन्म भारत के मुंबई में एक साधारण परिवार में हुआ था। बहुत कम उम्र से ही, उन्होंने क्रिकेट और हॉकी के प्रति गहरा जुनून दिखाया। अपने स्कूल के दिनों में, उन्होंने क्रिकेट पर गंभीरता से ध्यान केंद्रित करने का फैसला किया। बिना किसी बड़ी सुविधा या प्रोफेशनल मैदान के, उन्होंने अपने अपार्टमेंट की छत पर अभ्यास करना शुरू किया, और रोज़ अपने पिता के साथ ट्रेनिंग करती थीं। क्रिकेट में सफल होने के अटूट दृढ़ संकल्प से प्रेरित होकर, उन्होंने सुबह-शाम लगातार अभ्यास किया। साथ ही, उन्होंने अपनी पढ़ाई को कभी नज़रअंदाज़ नहीं किया।

अपनी लगन के बावजूद, जेमिमा का नाम कई क्रिकेट चयन से बाहर रह गया। उन्हें लगातार असफलताएँ मिलीं। लेकिन निराश होने के बजाय, उन्होंने और भी कड़ी ट्रेनिंग से जवाब दिया। सिर्फ़ 17 साल की उम्र में, उन्होंने दोहरा शतक लगाया, जिससे पूरे देश का ध्यान उनकी ओर गया। वह पल उनकी यात्रा की शुरुआत थी।

उसके बाद भी उनका रास्ता आसान नहीं था। उन्हें बार-बार झटके लगे, सोशल मीडिया पर कड़ी आलोचना का सामना करना पड़ा, और यहाँ तक कि व्यक्तिगत हमलों का भी—जिसमें उनके पिता पर ईसाई धर्म फैलाने का आरोप भी शामिल था। फिर भी, जेमिमा ने हार नहीं मानी। वह मज़बूती से खड़ी रहीं, केन्द्रित और निडर।

2025 ICC महिला विश्व कप में, शक्तिशाली ऑस्ट्रेलियाई टीम के खिलाफ, जेमिमा ने 127 रनों की मैच जिताने वाली पारी खेली, अंत तक नाबाद रहीं और भारत को जीत दिलाई। सारा श्रेय प्रभु यीशु को देते हुए, उन्होंने साहसपूर्वक गवाही दी कि वही उनकी सफलता की नींव हैं। जिन जगहों पर उन्हें कभी अपमान का सामना करना पड़ा था, वही अब ऐसे मंच बन गए हैं जहाँ लोग उनकी सफलता को देखकर हैरान हैं। सिर्फ़ 25 साल की उम्र में, जेमिमा ने 58 वनडे इंटरनेशनल खेले हैं, जिसमें 1,725 रन बनाए हैं।

प्रिय मित्रों जो इसे पढ़ रहे हैं, एक इंटरव्यू के दौरान जेमिमा ने शेयर किया, "मेरा एकमात्र विचार था कि भारत को जीतना चाहिए।" उन्होंने बाइबिल के 2 इतिहास 20:17 का भी ज़िक्र किया। क्योंकि उसने अपना पूरा ध्यान अपने लक्ष्य पर लगाया और अपनी ज़िंदगी में परमेश्वर को सबसे पहले रखा, इसलिए आज वह लाखों युवाओं के लिए एक प्रभावशाली रोल मॉडल है।

जेमिमा की तरह, आपको मिले हर मिनट का पूरा फायदा उठाएं। अपने आज को अपनाएं, जुनून के साथ अपने सपनों का पीछा करें, और हिम्मत से अपने भविष्य को आकार दें!

झारखंड युवा जागृति सम्मलेन – 2026

निरंजन बेक

तारीख: 18 अप्रैल 2026

गाँव: अद्रास नगर, जुरिया,
बी.एस. के पास कॉलेज,
P.O: लोहरदगा,
जिला: लोहरदगा – 835302, झारखंड

7765913937 / 9962085523

पास्टर सुवेंदु परिदा

तारीख: 19 अप्रैल 2026

प्रार्थना भवन, चुराहा, पनकी,
HP गैस गोदाम के पास,
पनकी, पलामू – 822122, झारखंड

9955176905 / 9962085523

पास्टर प्रकाश होरो

तारीख: 20 अप्रैल 2026

गाँव: दोवरी, P.O: कर्रा, जिला: खूंटी,
झारखंड

9661825081 / 9962085523

भाई जॉर्ज कुजूर

तारीख: 21 अप्रैल 2026

C/o विशाल खलखो, सरना टोली,
कडरू, सड़क नंबर. 1,
रांची – 834002, झारखंड

7765913937 / 9962085523

मुख्य वक्ता:

भाई सैम जेबराज
डॉ. अंबू राजन